* विकास की अवस्थाएँ (Stages of Development) :—

प्रत्येक मनुष्य जन्म से लेकर मृत्यु तक विकास की कई अवस्थाओं से होकर गुजरता है। उसका मानसिक, भाषायी, संवेगात्मक, सामाजिक और चारित्रिक विकास निरन्तर होता रहता है। यह सब विकास उसके विभिन्न आयु स्तरों पर भिन्न-भिन्न रूप में होता है। इन आयु स्तरों को ही विकास की अवस्थाएँ कहते हैं। भिन्न-भिन्न मनोवैज्ञानिकों ने मानव विकास की अवस्थाओं को भिन्न-भिन्न रूप में वर्गीकृत किया है :—

* हरलॉक के अनुसार विकास की अवस्थाएँ :—

(i) गर्भावस्था → जन्म से पूर्व
(ii) प्रारम्भिक शैशवावस्था → जन्म से 14 दिवस तक
(iii) उत्तर शैशवावस्था → 14 से 2 वर्ष तक
(iv) बाल्यावस्था → 2 से 11 वर्ष तक
(v) प्रारम्भिक किशोरावस्था → 11 वर्ष - 13 वर्ष तक
(vi) किशोरावस्था → 13 से 17 वर्ष तक
(vii) उत्तर किशोरावस्था — 17 से 21 वर्ष तक

* रॉस के अनुसार विकास की अवस्थाएँ :—

(i) शैशवावस्था → 1 से 3 वर्ष तक
(ii) प्रारम्भिक बाल्यकाल → 3 से 6 वर्ष तक
(iii) उत्तर बाल्यकाल → 6 से 12 वर्ष तक
(iv) किशोरावस्था → 12 से 18 वर्ष तक

Scanned with CamScanner

कालेसनिक ने विकास की अवस्था को आठ वर्गों में विभाजित किया है :—

(i) पूर्व जन्म काल → गर्भावस्था से जन्म तक
(ii) नव शैशव काल → जन्म से 3-4 सप्ताह तक
(iii) आरम्भिक शैशवावस्था → 1 से 15 माह तक
(iv) उत्तर शैशवावस्था → 15 - 30 माह तक
(v) पूर्व बाल्यावस्था → 2½ वर्ष से 5 वर्ष तक
(vi) मध्य बाल्यावस्था → 5 वर्ष से 9 वर्ष तक
(vii) उत्तर बाल्यावस्था → 9 वर्ष से 12 वर्ष तक
(viii) किशोरावस्था → 12 वर्ष से 21 वर्ष तक

डॉ अरनेस्ट जोन्स के अनुसार

(i) शैशवावस्था - जन्म से 5 या 6 वर्ष तक
(ii) बाल्यावस्था - 5 से 12 वर्ष तक
(iii) किशोरावस्था - 12 से 18 वर्ष तक
(iv) प्रौढ़ावस्था - 18 वर्ष के बाद।

भारत में सर्वमान्य विकास की अवस्थाएँ

(i) गर्भावस्था → गर्भाधान से जन्म तक
(ii) शैशवावस्था → जन्म से 5 वर्ष तक
(iii) बाल्यावस्था → 5 - 12 वर्ष तक
(iv) किशोरावस्था → 12 - 18 वर्ष तक
(v) युवावस्था → 18 - 25 वर्ष तक
(vi) प्रौढ़ावस्था → 25 - 55 वर्ष तक
(vii) वृद्धावस्था → 55 से मृत्यु तक

इस प्रकार से कहा जा सकता है कि शिक्षक एवं शिक्षा की दृष्टि से, शैशवावस्था बाल्यावस्था तथा किशोरावस्था विशेष रूप

Scanned with CamScanner

से महत्वपूर्ण होते हैं। इन अवस्थाओं में होने वाले परिवर्तन के आधार पर ही अध्यापक अधिगम - अवसरों का सृजन कर सकता है तथा विकास को दिशा दे सकता है।

* अभिवृद्धि का अर्थ एवं परिभाषाएँ (Meaning and Definitions of Growth) :— कोशिकाओं की गुणात्मक वृद्धि ही अभिवृद्धि कहलाती है। जैसे - ऊँचाई, भार, चौड़ाई आदि की वृद्धि, हाथ पैर का बढ़ना, बालों का बढ़ना आदि अभिवृद्धि कहलायेगी।

* फ्रैंक के अनुसार - "कोशीय गुणात्मक वृद्धि ही अभिवृद्धि है (Cellular Multiplication is growth)"

* मेरीडिथ के अनुसार - "कुछ लेखक अभिवृद्धि का प्रयोग केवल आकार की वृद्धि के अर्थ में करते हैं और विकास का विभेदीकरण के अर्थ में"

"Some writers reserve the use of 'Growth to designate increments in size and of 'development' to mean differentiation." — Meridith.

** फ्रैंक के अनुसार "अभिवृद्धि से तात्पर्य कोशिकाओं में होने वाली वृद्धि से होता है जैसे - लम्बाई एवं भार में वृद्धि, जबकि विकास से तात्पर्य प्राणी में होने वाले सम्पूर्ण परिवर्तन से होता है।

Scanned with CamScanner

Growth is regarded as multiplication of cell, as growth in hight and weight, while development refers to the changes in organism as a whole.

* हारलॉक के अनुसार — "विकास मात्रात्मक परिवर्तन को संदर्भित करता है"

— "Growth refers to Quantitative change"

* हर्बर्ट सोरेन्सन के अनुसार — "अभिवृद्धि से तात्पर्य है आकार एवं भार में बड़ा होना तथा यह वृद्धि परिवर्तन का सूचक है।

— "Meaning of growth, is Being large size and wait. it is symb of growth change."

Scanned with CamScanner

उपर्युक्त परिभाषा से यह स्पष्ट है कि सामान्यतः व्यक्ति के स्वाभाविक विकास को अभिवृद्धि कहते हैं। गर्भ धारण के समय भ्रूण बनने से लेकर जन्म लेने तक जो प्रगतिशील परिवर्तन होते हैं तथा प्रौढ़ावस्था तक व्यक्ति में जो भी स्वाभाविक परिवर्तन होते हैं जिन पर शिक्षण अथवा प्रशिक्षण का प्रभाव नहीं पड़ता, अभिवृद्धि कहलाते हैं।

Scanned with CamScanner

* वृद्धि और विकास की तुलना (Comparison Between Growth and Development)

वृद्धि और विकास में मुख्य अंतर निम्नलिखित हैं :—

वृद्धि (Growth)	विकास (Development)
(1) वृद्धि जीवन पर्यन्त नहीं होती। एक निश्चित आयु के लगभग रुक जाती है।	(1) विकास का अर्थ जीवन पर्यन्त एक व्यवस्थित और लगातार आने वाला परिवर्तन है।
(2) परिपक्व अवस्था प्राप्त होते ही अभिवृद्धि रुक जाती है।	(2) विकास कभी भी नहीं रुकता। परिपक्वता की अवस्था प्राप्त होने पर भी विकास नहीं रुकता।
(3) वृद्धि का संबंध शारीरिक तथा मानसिक परिपक्वता से है।	(3) विकास का संबंध वातावरण एवं वंशानुक्रम से होता है।
(4) मात्रात्मक पहलू में परिवर्तन अभिवृद्धि के क्षेत्र में आता है।	(4) यह मात्रात्मक पहलुओं का नहीं बल्कि गुणवत्ता और स्वरूप के परिवर्तन का संकेत देता है।

MAY JUNE Sunday 18

Scanned with CamScanner

वृद्धि (Groth)	विकास (Development)
(5) वृद्धि में व्यक्तिगत भेद होते हैं। प्रत्येक बालक की वृद्धि समान नहीं होती।	(5) विकास की दर, सीमा में अन्तर होते हुए भी उसमें समानता पायी जाती है।
(6) अभिवृद्धि के साथ विकास हो भी सकता है। एक बालक का भार व मोटापा बढ़ने के साथ यह आवश्यक नहीं है कि वह किसी कार्यात्मक परिष्कार को प्राप्त कर ले।	(6) अभिवृद्धि के बिना विकास हो सकता है। कुछ बालकों के कद, भार या आकार में वृद्धि न होने पर भी वे भौतिक, सामाजिक, भावात्मक या बौद्धिक पहलुओं में विशेष कार्यानुभव हो सकते हैं।
(7) अभिवृद्धि से होने वाले परिवर्तन मापे जा सकते हैं।	(7) विकास का परिवर्तन की मापु करना काफी कठिन है।
(8) अभिवृद्धि मनुष्य की विकास प्रक्रिया का हिस्सा या एक पहलु है।	(8) विकास एक व्यापक और परिज्ञान वाला शब्द है उसमें वृद्धि भी सम्मिलित रहती है।
(9) अभिवृद्धि एकाकी प्रक्रिया है जो शरीर के विभिन्न अंगों की उत्तरोत्तर बढ़ रही समन्वित कार्य क्षमता में वृद्धि को इंगित करता है।	(9) विकास के परिणामस्वरूप व्यक्ति में नवीन क्षमताएं प्रकट होती हैं, क्योंकि यह एक बहुआयामी प्रक्रिया है।

Scanned with CamScanner